पाठ 18

बहादुर बेटा

(प्रस्तुत एकांकी में लेखक ने एक बहादुर बालक की बहादुरी का वर्णन किया है।)

पात्र- माँ

संदीप- -बड़ा बेटा

कुलदीप -छोटा बेटा

मधुर -बेटी

एक युवक -संदीप का मित्र

एक युवक डाक्टर और एक युवती -दोनांे रेडक्रास के सदस्य

(मंच पर एक साधारण से घर का एक कमरा। मधुर बैठी पढ़ रही है। बीच-बीच में घड़ी की ओर देख लेती है। उसी समय माँ अन्दर से आती है।)

माँ- क्या बज गया मधुर ? अरे ! चार बजने वाले हंै और उन दोनों में से कोई भी नहीं आया !

मधुर- यही तो मंै भी देख रही हूँ। बड़े भैया तो बारह बजे तक आ जाते थे और दो बजे तक कुलदीप भी आ जाता था। आज दोनों न जाने कहाँ चले गये?

इसी समय कुलदीप तेजी से भागता हुआ आता है।

कुलदीप- माँ, माँ, तुमने सुना ? बड़े जोर का तूफान आया है। नदियों में बाढ़ आ गयी है। स्कूल में मास्टर जी कह रहे थे, गाँव के गाँव बह गये। सैकड़ों आदमी भी बह गये। जानवरों का तो कहना ही क्या ? मकान गिर पड़े । चारों तरफ हाहाकार मचा है। मास्टर जी ने कहा है कि हम लोगों को उनकी मदद करनी चाहिए, वहाँ जाना चाहिए। उनको कपड़े और पैसे देने चाहिए। (तेजी से बोलता चला जाता है।)

मधुर - चर्चा तो आज हमारे स्कूल में भी हो रही थी पर ऐसी कोई बात मैंने नहीं सुनी कि इतना नुकसान हुआ ।

कुलदीप- तुमको कुछ पता भी है? इतने जोरों का तूफान आया कि नदी का सारा पानी गाँव में भर गया। इसलिए यह हुक्म हुआ है कि जो कोई जो कुछ भी कर सके, करे। जो युवक हैं और स्वस्थ हैं, वे वहाँ जाकर लोगों को बचाने का काम करें। जो धनी हैं वे धन दें, जिनके पास अनाज है, वे अनाज दें। कपड़े हैं, कपड़े दें.....

माँ- हाँ, हाँ, यह तो होना चाहिए। मेरे पास पैसा तो नहीं है लेकिन जो कुछ हो सकता है वह अवश्य करूँगी। कहाँ भेजना होगा पैसा ?

कुलदीप- वह तो लेने वाले यहीं आ जायंेगे। लेकिन मैं जा रहा हूँ।

मधुर- माँ -(एक साथ) तू कहाँ जा रहा है?

कुलदीप- लोगों को बचाने।

माँ - (हँसकर) तेरे विचार बहुत अच्छे हैं। लेकिन तू इतना छोटा है कि उनको क्या बचायेगा? खुद वे लोग तुझे ही बचाने की परेशानी में पड़ जायेंगे। पहले तू रोटी खा ले और हाँ, संदीप अभी क्यों नहीं आया। कहीं वह भी.....

मधुर - हाँ, माँ, वह जरूर चले गये होंगे। वह दिन-रात इसी तरह की बातें करते रहते हैं-

'मैं कुछ करना चाहता हूँ। मेरे पिता और मेरे चाचा ने आजादी की लड़ाई लड़ी थी।

मेरे देश के हजारों लोगों ने अपने प्राण दिये थे। अपना सब कुछ लुटा दिया था।

अब मुझे कुछ करना चाहिए। मुझे भी अपने देश की सेवा करनी चाहिए।'

(सहसा एक युवक का प्रवेश)

युवक - संदीप का घर यही है?

सब - (एक साथ) हाँ, हाँ यही है। क्या बात है?

युवक - मैं आपको बताने आया हूँ कि संदीप बाढ़ पीड़ित लोगों की सहायता करने के लिए चला गया है।

माँ - (घबराकर) क्या ?

मधुर - तो भैया चले ही गये।

युवक - लेकिन आप कोई चिन्ता न कीजिए। (तेजी से कहकर लौटता है।)

माँ - हे भगवान ! यह सब क्या हो रहा है ? कब दूर हांेगी ये परेशानियाँ ? कितना बलिदान चाहता है तू ? हे भगवान ! तू मेरे बच्चे की रक्षा करना। वह खूब सेवा करे। पर.....पर.....

मधुर - (माँ को झकझोरकर) माँ, माँ, तुम कहाँ खो गयी हो ? क्या सोचने लगी ? हमें कुछ करना चाहिए। चलो, हम दोनों घर-घर से अनाज और धन इकट्ठा करें। और हाँ, बाढ़पीड़ितों के लिए खाने की जरूरत भी तो होगी।

कुलदीप- खाना, कपड़ा, मकान सभी चीजों की जरूरत होगी। मास्टर जी कहते थे कि सरकार प्रबंध कर रही है। कैंप लगवा दिये हैं। माँ, मैं जाता हूँ। स्कूल में वालंटियरों की जरूरत है। मैं कैंप में जाकर तो काम कर ही सकता हूँ।

माँ - क्यों नहीं कर सकता ? तू भी जा। लेकिन एक बात का ध्यान रखना, नदी के पास मत जाना।

कुलदीप- मैं नदी के पास क्यों जाऊँगा। वह तो खुद ही हमारे पास आ गयी है। (हँसकर) अच्छा, मैं चला।

(तेजी से चला जाता है। बाहर शोर उठता है। माँ खिड़की से झाँकती है।)

मधुर - देखो, देखो, माँ कितने लोग इधर ही चले आ रहे हंै, और वह देखो ट्रक भी आ रहे हैं। ऐसा लगता है कि ये बाढ़पीड़ित गाँवों से लोगों को निकालकर ला रहे हैं। क्यों माँ, एक परिवार को तो हम भी अपने घर में रख सकते हैं !

माँ - क्या अच्छा हो यदि सभी ऐसा कर सकें, फिर तो बहुत सारी समस्याएँ यों ही खत्म हो जायें। पता नहीं सरकार क्या करेगी ? लेकिन मुझे खुशी है कि मेरे दोनों बेटे सेवाकार्य में लग गये। भगवान उनकी रक्षा करे।

मधुर - जो दूसरों की रक्षा करते हैं, भगवान उनकी रक्षा करते हैं।

माँ - हाँ, करते तो हैं।

(सहसा माँ फिर ध्यानस्थ हो जाती है और वहीं बैठ जाती है। मधुर उसे फिर झकझोरना चाहती है। लेकिन सहसा रुक जाती है, जैसे दूर कहीं से संगीत का मधुर स्वर उठता है। वह चारों ओर देखती है, तभी एक युवती वहाँ आ जाती है। उसके वस्त्रों पर रेडक्रास का चिह्न लगा हुआ है।)

युवती - क्या संदीप जी का मकान यही है?

मधुर - जी।

माँ - (आँखें खोलकर) संदीप, कहाँ है संदीप? कैसा है वह?

युवती - आप शायद उनकी माँ है? चिंता मत कीजिए। कोई विशेष बात नहीं है।

मधुर - लेकिन आप हैं कौन?

युवती - मैं रेडक्रास की सदस्या हूँ। बाहर मेरे बहुत से साथी हैं। हम सब लोग बाढ़पीड़ितों की सहायता करने के लिए गये हुए थे। आप के पुत्र संदीप जी ने वहाँ बहुत काम किया। अपने प्राणों की चिन्ता किये बिना उन्होंने सैकड़ों लोगों को बचाया। उनका साहस देखकर हम लोग दंग रह गये। हमारे मना करने पर भी उन्होंने आराम नहीं किया। लेकिन अचानक.....

माँ और मधुर- (एक साथ) अचानक क्या हुआ? बोलतीं क्यों नहीं? उन्हें क्या हुआ?

युवती - आप घबराइए नहीं, मैं बता रही हूँ। लोगों को बचाते -बचाते अचानक उनकी नाव पलट गयी। उन्हें तैरना आता था। उन्होंने वहाँ भी लोगों की मदद की। जब तक सबको दूसरी नाव में नहीं चढ़ा दिया, तब तक वह नहीं चढ़े, और जब चढ़ने लगे तब सहसा पानी का बड़े जोर का रेला आया और वह बह गये|

माँ - (चीखकर) हाय राम !

युवती - (शीघ्रता से) नहीं, नहीं दूसरे लोगों ने उन्हें शीघ्र बचा लिया। कठिन परिश्रम के कारण वह बेहोश हो गये हैं, लेकिन हमने उन्हें फस्ट-एड दे दी है। बहुत जल्दी ही वह ठीक हो जायेंगे।

मधुर- वह हैं कहाँ ?

युवती - बाहर। हमारी गाड़ी में। आप मेरे साथ आइए। उन्हें अंदर ले आयें।

(सब तेजी से चले जाते हैं। मधुर एकदम लौटती है और पलंग बिछाती है। फिर बाहर की ओर भागती है, तभी वे सब संदीप को लाकर पलंग पर लिटा देते हैं।)

युवती - (युवक को दिखाकर) यह हमारे डॉक्टर हैं। इन्होंने अच्छी तरह देख लिया है। डर की कोई बात नहीं है। अभी दो क्षण में ही इन्हंे होश आ जाता है।

युवक - मैं अभी एक और इंजेक्शन दिये देता हूँ। चिंता की कोई बात नहीं है। आप का बेटा बहुत बहादुर है।

(कुलदीप भागा हुआ आता है।)

कुलदीप - माँ, माँ, मैंने सुना है.....(एकदम देखकर) अरे, यह तो भैया आ गये। क्या हुआ इन्हें, और ये कौन हैं ?

मधुर - बाढ़पीड़ितों को बचाते-बचाते भैया स्वयं नदी में गिर गये। इन लोगों ने उन्हें बचाया है। थक गये हैं और कोई खास बात नहीं है।

(अन्दर जाती है।)

युवक - बस, इन्हें होश आ रहा है। लेकिन आप लोग इनसे ज्यादा बातें मत कीजिए। शाम तक चुपचाप पड़े रहने दीजिए। रात को मैं आकर देख जाऊँगा।

माँ - हे भगवान! इस दुनिया में कितने अच्छे लोग हैं।

संदीप - (आँखे खोलकर) मैं, मैं कहाँ हूँ ?

युवक - अपने घर में हो। यह तुम्हारी माँ हंै, बहन है, भाई है और हम हैं तुम्हारे साथी।

संदीप - ओह! तुम हो डॉक्टर। मुझे इतना ही याद है कि जैसे मैं डूब गया हूँ और फिर कोई अन्तरिक्ष में से आकर बचा रहा है, वह तुम थे।

युवती - संदीप बाबू, आप बोलिए नहीं। एक-दो दिन आराम कीजिए।

संदीप - बहुत अच्छा डॉक्टर! आपकी आज्ञा का पालन होगा। (सब हँस पड़ते हैं)

युवक और युवती - (एक साथ) अच्छा, अब हमें आज्ञा दीजिए।

माँ - नहीं, नहीं ऐसे नहीं। बिना मुँह मीठा किये तुम नहीं जा सकते। अरे मधुर ! लो वह तो अन्दर चली भी गयी। शायद चाय बना रही होगी।

युवक - माँ हमें तो आज्ञा ही दीजिए।

कुलदीप - समझ लीजिए, भइया को अभी होश नहीं आया है। बस पाँच मिनट लगेंगे।

(सब हँसते हैं। वह भी अन्दर चला जाता है।)

माँ - आप लोग दुनिया की इतनी सेवा करते हैं। कभी-कभी हमें भी अवसर दिया कीजिए।

युवती - हम भी तो आपके ही हैं और फिर आपने कम सेवा की है क्या ?

(दोनों मुस्कराते हैं और अन्दर से मधुर, कुलदीप चाय का सामान लेकर आते हैं। पर्दा गिरने लगता है।)

-विष्णु प्रभाकर

विष्णु प्रभाकर जी का जन्म 21 जून, सन् 1912 ई0 को मुजफ्फरनगर जिले के मीरनपुर (मीरापुर) गाँव में हुआ। पंजाब विश्वविद्यालय से बी.ए. और फिर हिन्दी प्रभाकर परीक्षा उत्तीर्ण की। यहीं से इनके नाम के साथ 'प्रभाकर' जुड़ गया। विष्णु जी ने उपन्यास, कहानी, नाटक, एकंाकी, स्कैच और रिपोर्ताज विधाओं

में अनेक रचनाएं की हंै। 'सीमा-रेखा', 'पुस्तक कीट' आदि आपके प्रमुख एकंाकी हैं। 'आवारा मसीहा' आपकी बहुप्रशंसित रचना है। इनका निधन 11 अप्रैल 2009 को हुआ।

शब्दार्थ

सहसा=अचानक। **समस्याएँ**=कठिनाइयाँ। **वालंटियर**=स्वयंसेवक। **हुक्म**=आदेश। **फर्स्ट एड** = प्राथमिक चिकित्सा। **अन्तरिक्ष** = पृथ्वी और स्वर्ग के बीच का स्थान, आकाश।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. अपने शिक्षक या बड़ों से पूछकर फस्र्ट-एड (प्राथमिक उपचार) के बारे में जानकारी प्राप्त कर फस्र्ट-एड बाक्स बनाइए।

2. नीचे दिये गये कथोपकथन को आगे बढ़ाते हुए 'एकांकी' की रचना कीजिए-

(श्रिया नामक लड़की का घर में प्रवेश) माँ- श्रिया, तुम तो अपनी सहेली अंजू के घर गयी थी, बड़ी देर लगा दी, बेटी !

श्रिया- माँ, वहाँ टेलीविजन पर बहुत अच्छा कार्यक्रम आ रहा था, मैं उसे देखने लगी थी। (पिता जी से) पिता जी अपने घर भी एक टेलीविजन खरीद दीजिए न!

3. इस एकांकी का कक्षा में अभिनय कीजिए।

विचार और कल्पना

1. "आप लोग दुनिया की इतनी सेवा करते हैं। कभी-कभी हमें भी अवसर दिया कीजिए।" आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा ?

2. क्या आपने कभी बाढ़ का दृश्य देखा है ? बाढ़ आने पर आप सुरक्षा के कौन-कौन से उपाय करेगें ?

3. प्राकृतिक आपदाएँ जैसे-बाढ़, सूखा, भूकम्प आदि अचानक आती हैं। सोचें और बताएँ कि इन आपदाओं के आने पर हमंे क्या करना चाहिए और क्या नही ?

एकांकी से

1. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर पाठ के आधार पर उनको सही क्रम में लिखिए -

(क) नदियों में बाढ़ आ गयी है। (ख) गाँव के गाँव बह गये।

(ग) बड़े जोर का तूफान आया है। (घ) चारों तरफ हाहाकार मचा है।

2. संदीप के होश में आने पर डॉक्टर युवक ने किस क्रम में सबका परिचय कराया, सही क्रम चुनें -

(क) भाई, बहन, साथी और माँ (ख) बहन, भाई, माँ, और साथी

(ग) माँ, बहन, भाई और साथी (घ) साथी, बहन, माँ, और भाई

3. पाठ के आधार पर निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए-

(क) जो कोई जो कुछ भी कर सके, ...।

(ख) जो युवक हैं और स्वस्थ हैं, ...।

(ग) जो धनी हैं, ...।

(घ) जिनके पास अनाज है, ...।

4. निम्नलिखित कथोपकथन किसके द्वारा कहे गये हैं-

(क) मेरे पास पैसा तो नहीं हैं, लेकिन जो कुछ हो सकता है, अवश्य करूँगी।

(ख) मैं नदी के पास क्यों जाऊँगा, वह तो खुद ही हमारे पास आ गयी है।

(ग) एक परिवार को तो हम भी अपने घर में रख सकते हैं।

(घ) जिनके पास अनाज है, ...।

5. ट्रक को देखकर मधुर ने अपनी माँ से बाढ़ पीड़ितों के बारे में क्या कहा ?

6. युवक और युवती द्वारा चलने की आज्ञा लेते समय माँ ने क्या कहा ?

7. एकांकी के कौन से संवाद आपको अच्छे लगे ?

भाषा की बात

1. 'वालंटियरों' शब्द वालंटियर का हिन्दी में प्रयुक्त बहुवचन रूप है। अंग्रेजी शब्द का हिन्दी में प्रयोग करने पर उनका बहुवचन हिन्दी की प्रकृति के अनुसार बनाया जाता है, इसलिए यहाँ अंग्रेजी का बहुवचन रूप 'वालंटियर्स' न करके 'वालंटियरों' लिखा गया है। पाठ में प्रयुक्त निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों का हिन्दी बहुवचन रूप बनाइए-

ट्रेन, कैंप, स्कूल, डॉक्टर, इंजेक्शन।

2. नीचे लिखे मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए:

हाहाकार मचना, सब कुछ लुटा देना, चैन से न बैठना।

इसे भी जानें

केन्द्रीय भाषा संस्थान मैसूर, कर्नाटक में स्थित है।